



जिलेट न्यूरोलॉजी

(एक मरीज़ की नज़र से)

“क्लिनिक मरीज़ों का इलाज करता है। देखभाल करने वाला समुदाय लोगों को सहारा देता है।”

I. न्यूरोलॉजिकल बीमारी

हर किसी को अपना दिल खो देने का डर था।

सदियों तक दिल को जीवन का केंद्र माना गया, भावनाओं, ताक़त और साहस का ठिकाना। दिल रुकता, तो सब ख़त्म हो जाता।

फिर धीरे-धीरे इंसान समझने लगा कि एक और शासक भी है।

ख़ामोश।

अदृश्य।

निरंकुश।

दिमाग़।

परिवारों, दोस्तों, जान-पहचान वालों को, पीढ़ियों के गुज़रने और बीमारी के आने को देख लेना ही एक सीधी-सी सच्चाई समझने के लिए काफ़ी था: दिमाग़ ही सब कुछ चलाता है।

हर हरकत।

हर शब्द।

हर याद।

हर उम्मीद।

जब दिमाग़ में बिगाड़ आता है, तो शरीर का सिर्फ़ एक हिस्सा तकलीफ़ नहीं उठाता। पूरा मानव तंत्र तकलीफ़ उठाता है।

लंबे समय तक, जवाब डर ही था।

न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की चपेट में आए लोगों को अलग-थलग कर दिया जाता, छिपा दिया जाता; उन्हें अक्सर कम समझा जाता, और मदद उससे भी कम मिलती। परिवार एक भारी बोझ अकेले उठाते। चिकित्सा का ज्ञान सीमित था, और ख़ास इसी के लिए बने संस्थान लगभग थे ही नहीं।

यह एक ऐसी लड़ाई लगती थी जिसमें हार तय थी।

फिर समझ का दौर आया।

इंसान ने समझा कि उसके सामने इक्का-दुक्का मामले नहीं, बल्कि उसके अपने अस्तित्व की बड़ी चुनौतियों में से एक खड़ी है।

पार्किंसन।

अल्ज़ाइमर।

अपक्षयी बीमारियाँ।

न्यूरोलॉजिकल चोटें।

आघात।

दुर्लभ बीमारियाँ।

जन्मजात विकार।

एक ही हक्रीकत के अलग-अलग नाम: उस अंग की नाज़ुकी जो हमारे जीवन की हर क्रिया को चलाता है।

उसी पल से न्यूरोलॉजी सिर्फ़ चिकित्सा की एक शाखा नहीं रही।

वह एक सामूहिक ज़िम्मेदारी बन गई।

न्यूरोलॉजिकल बीमारी दरवाज़ा नहीं खटखटाती।

वह लोगों की ज़िंदगी में घुस आती है और खेल के नियम बदल देती है।

II. क्यों?

यह समझाने के लिए कि न्यूरोलॉजिकल बीमारी के साथ जीने का मतलब क्या है:

शरीर, जो जवाब नहीं देता;

सीमाएँ;

निर्भरता;

आत्मनिर्भरता का छिन जाना;

सामान्य होने की नई परिभाषा।

बीमारी नहीं।

बीमारी के इर्द-गिर्द की ज़िंदगी। दूसरों के इर्द-गिर्द की ज़िंदगी।

बोझ उठाने वाला लगभग कभी मरीज़ नहीं होता। मरीज़ अक्सर रणभूमि को पूरी तरह समझे बिना ही लड़ता है। जो पास बना रहता है, वह समय को शक्ल बदलते देखता है, और सीखता है कि जीता हुआ हर दिन बड़े-बड़े वादों से ज़्यादा क्रीमती है।

बीमारी रास्ता बदल सकती है। वह इंसान का मूल्य नहीं मिटा सकती।

प्यार इसका सबसे ज़रूरी हिस्सा है, किसी भी महज़ जीत से परे — और कोई कभी नहीं जान पाएगा कि उसके साथ क्या होगा।

मैं इससे गुज़र चुका हूँ: बाइपोलर डिसऑर्डर, अनिश्चित दर्जे का, जो आखिर में बचपन की अति-सतर्कता से ज़्यादा कुछ नहीं निकला, और जिसकी वजह मेरी माँ थीं, जिन्होंने पुरानी कहावत “पिटाई और पकौड़े बच्चों को सुंदर बनाते हैं” पर चलते हुए मुझ पर थप्पड़ों की झड़ी लगा दी और मेरे दिमाग का इक्वलाइज़र चालू कर दिया।

चीज़ों को उनके होने से पहले समझ लेना — पर मैं न जादूगर हूँ, न संत, न कोई चमत्कार करने वाला।

फिर भी दुख झेलने वालों के करीब — अलज़ाइमर के हाथों माँ और पिता दोनों को खो देने के बाद, और यह पूछने के बाद: पर यह है कौन? मैं इसे नहीं जानता।

III. उपसंहार

क्लिनिक एक इमारत है।

देखभाल करने वाला समुदाय उससे कुछ ज़्यादा है।

वह रोज़ का मिलन है उन लोगों का जो तकलीफ़ में हैं, जो साथ चलते हैं, जो देखभाल करते हैं, और जिन्होंने एक ऐसी जगह बनाने की ज़िम्मेदारी उठाने का फ़ैसला किया है जहाँ उम्मीद को तरीक़े, लगन और संभावना में बदला जा सके।

ये पन्ने किसी इमारत की कहानी नहीं कहते।

ये उन लोगों की कहानी कहते हैं जो उससे होकर गुज़रते हैं।

हर दिन।

IV. लेखक-पृष्ठ

यह रचना किसी के कहने पर नहीं लिखी गई।

यह बेची नहीं गई।

यह किसी व्यावसायिक मक़सद से नहीं बनाई गई।

यह पुनर्वास के, मानवीय गरिमा के और लोगों के आपसी रिश्ते के मूल्य की गवाही देने के लिए लिखी गई।

माँगा गया एकमात्र मेहनताना एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना की कीमत के तौर पर नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति साझा प्रतिबद्धता के साक्ष्य के तौर पर।

फर्दिनांदो